Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, JUNE-JULY, 2020, VOL- 8/40

भारतीय समाज पर मॉल कल्चर का प्रभाव : समाजशास्त्रीय पाठ

विमल कुमार लहरी , Ph.D.

असि. प्रोफेसर , समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय Email: vimalk.lahari1@bhu.ac.in

Abstract

प्रस्तुत शोध–पत्र अनुभवजन्य पद्धति पर आधारित है। जिसमें वैयक्तिक अनुभव के से प्राप्त तथ्यों, लोकजन के मतों एवं द्वितीयक स्रोतों को आधार बनाकर पूर्ण किया गया है। इस शोध–पत्र में प्राप्त तथ्यों से निष्कर्ष और निर्मित अवधारणाओं को प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध–पत्र में भारतीय समाज पर मॉल संस्कृति के प्रभाव के विभिन्न सूचकों (पैरॉमीटर) पर लिपिबद्ध करने का प्रयास किया गया है जिसमें मानव जीवन के लगभग प्रत्येक पक्षों को सम्मिलित किया गया है।

प्रमुख शब्द *:मॉल कल्चर, सूचक, आधुनिकता, वैश्विक गांव, संस्कृतिकरण, सहभागिता, बनावटीपन, वैयक्तिक स्वतंत्रता, आदिम बाजार, मूल्य, मान्यता, परम्परा, परिवार, मठ, मंदिर।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

परिचय एवं सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य

मानव के बीच वस्तु विनियम की यात्रा आज मॉल कल्चर के पायदान तक पहुंच चुकी है। मानव की आदिम अर्थव्यवस्था का प्रारम्भिक स्वरूप इसी तरह का था। काल और स्थान के सापेक्ष वस्तु विनियम के नाम कुछ अलग जरूर थे। जिसे हम वासी, लागा, पाट्लैच, कुला, गैमवाली, लागा, पोकाला, योउला, गिमाये, उमाये एवं सचापेरा आदि के नाम कुछ जानते हैं। इस सभ्यता के बीच मानव जैसे–जैसे संस्थागत होता गया वैसे–वैसे कुछ निर्धारित स्थानों पर लोग इकट्ठा होकर वस्तु के बदले वस्तु की खरीददारी का प्रचलन आरम्भ हुआ और यही से हम बाजार का प्रारम्भिक स्वरूप भी देखते हैं।

प्राचीन बाजार एक निश्चित स्थान एवं निश्चित समय पर लगते थे। कुछ साप्ताहिक, कुछ 15 दिन, तो कुछ पूरे महीने के अंतराल पर लगते थे। जहाँ खाद्य सामग्री से लेकर जीवन के उपयोग से जुड़ी लगभग सभी चीजें मिलती थी और इस तरह से वस्तु विनियम का बाजारवादी स्वरूप प्रारम्भ हुआ। मानव सभ्यता जैसे–जैसे सभ्यता के पायदान को पार करती गयी वैसे–वैसे इनके स्वरूप भी बदलते गये। कालान्तर में वस्तु विनियम की जगह खरीददारी में मुद्रा का चलन हुआ, यहीं से प्रारम्भ होती है, मुद्रा आधारित बाजर की व्यवस्था, जहां वस्तु विनिमय के बदले मुद्रा द्वारा सामानों की खरीद फरोख्त होना प्रारम्भ हुआ। धीरे–धीरे परम्परागत बाजार लुप्त होने लगी, वहीं नये बजार स्थापित होने

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

लगे तथा मुद्रा विनियम बड़ी तेजी से होने लगा। मानव की विकासयात्रा में आज कहीं आधुनिकता तो कहीं उत्तर आधुनिकता का पायदान देखा जा सकता है। उत्तर आधुनिकता के पायदान पर स्थित मानव समाजों के बीच जहां शहरों के साथ गांवों तक भी छोटे–बड़े बाजारों का उदय हुआ लेकिन वे बाजार एक छत के नीचे सभी सामान बेचने वाले नहीं थे। जबकि आदिम बाजार जिस स्थान पर लगते थे, वहां खाद्य सामग्री से लेकर कपड, पशु, पक्षी, आभूषण आदि सभी एक स्थान पर मिलते हैं। लेकिन आज इसी के परिवर्तित स्वरूप में हम मॉल कल्चर को देखते हैं। मॉल कल्चर के अन्तर्गत एक स्थान पर सभी चीजें तो नहीं परन्तु बहुतायत चीजें देखी जा सकता है। लेकिन मॉल कल्चर परम्परा की बजाय आधुनिकता की वैचारिकी से पाषित है। इन स्थाना पर परम्परागत चीजें नहीं मिलेगी।

आज पूरी दुनियां में मॉल कल्चर बड़ी तेजी से बढ़ा है। सन् 2000 के बाद बड़े स्तर पर इसके अस्तित्व को देखा जा सकता है। मॉल कल्चर ने विपणन के स्वरूप को ही बदल कर रख दिया है। इसके कुछ फायदे मिले हो, कुछ नुकसान भी मिले। आधुनिकता से दूर परम्परागत जीवन भी इसके बड़े स्तर पर प्रभावित हुआ। इन्ही सब पक्षों का तथ्यपरक विश्लेषण अधोलिखित बिंदुओं पर प्रस्तुत किया गया है :

आदिम बाजारों का परिवर्तित स्वरूप मॉल कल्चर

मॉल कल्चर के संरचना एवं प्रकार्य को हम देखें तो इसका स्वरूप प्राचीन बाजारों का ही है। बस आधुनिकता का जामा पहना दिया गया है। आदिम बाारों में भी उपभोग की सभी वस्तुएं एक स्थान पर मिलती थी। आज मॉल कल्चर में भी मिल रही है। अन्तर इतना है कि आदिम बाजारों का कोई ब्रांड नहीं था। आज मॉल कल्चर में प्रत्येक वस्तुओं का एक टैग है। एक ब्रांड है। क्षेत्रीयता के बजाय वैश्विक स्तर पर पहचान है। अतएव कहा जा सकता है कि आदिम बाजारों का परिवर्तित स्वरूप ही मॉल कल्चर है।

परम्परागत मूल्यों में आधुनिकता का बोध

मॉल कल्चर में हम देखें तो हमारे परम्परागत मूल्यों में आधुनिकता का बोध दृष्टिगोचर होता है। मॉल कल्चर के प्रभावस्वरूप हमारे परम्परागत स्वरूप आधुनिक हुए हैं। ग्रामीण जन–जीवन इन मूल्यों से प्रभावित हुआ है। मॉल कल्चर ने ग्रामीण जीवन जीने के ढंग को भी बदलने में कामयाब हुआ है।

वैश्विक गांव की ओर कदम

1985 के बाद हम वैश्विकरण जैसी प्रक्रियाओं को देखते हैं, जहां वैश्विक गांव की अवधारणा अस्तित्व में आने लगी थी। लेकिन इधर विगत दो–तीन दशकों में मॉल कल्चर की यात्रा वैश्विक गांव की आर कदम तेजी से बढ़े हैं। वैसे आज हम दुनियां के किसी भी कोने से खरीददारी करने में सक्षम हैं। अतएव यह कहा जा सकता है कि दुनियां बहुत तेजी से बदली है। आज पूरा विश्व एक वैश्विक

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

गांव के रूप में दृष्टिगोचर है।

संस्कृतिकरण की प्रक्रिया का प्रमुख अभिकरण

संस्कृतिकरण की अवधारणा श्रीनिवास ने मैसूर से रामपुरा गांव के अध्ययन के आधार पर दिया था, जिसक अन्तर्गत उनका मानना है कि जब एक निम्न जाति का व्यक्ति अपनी जीवन शैली को छोड़कर उच्च जातियों की जीवन शैली को अपनाता है, तो यह प्रक्रिया संस्कृतिकरण कहलाती है। मॉल कल्चर में शहरी जीवन के साथ–साथ ग्रामीण गरीबों की भी सहभागिता सुनिश्चित हुई है। आधुनिकता से दूर जनसंख्या का एक बड़ा भाग मॉल कल्चर के संपर्क में आने से संस्कृतिकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा मिला है। इस तरह कहा जा सकता है कि मॉल कल्चर संस्कृतिकरण की प्रक्रिया का एक प्रमुख अभिकरण है।

सभी की सहभागिता

माल कल्चर ने अपने दरवाजे व्यक्ति विशेष के लिए ही नहीं खोले, बल्कि अंतिम व्यक्ति तक के लिए भी खोले हैं। आज मालों में निम्न दर से लेकर उच्च दर के अंतिम शिखर तक की सामग्रियां उपलब्ध हैं। इस देखा जाय तो मॉल कल्चर में अमीरों के साथ–साथ गरीबों की भी भागीदारी सुनिश्चित हो रही है। वैसे एक तरफ जहां यह उपभोक्तावादी संस्कृति की विशेषता है वहीं दूसरी तरफ सहभागिता का नया संदर्श भी प्रस्तुत करती है।

ग्रामीण जीवन पर प्रभाव

ग्रामीण जीवन अपनी यात्रा में परम्परागत मूल्यों से अधिक प्रभावित रहा है। आधुनिककता के पायदान पर भी ग्रामीण समाज अपनी परम्परागत मूल्यों को पूरी तरह से छोड़ नहीं पाया है। लेकिन मॉल कल्चर ने ग्रामीण जीवन को प्रभावित किया है। ग्रामीण जीवन का कुछ तबका मॉलों में खरीददारी करते देखें जा सकते हैं। यह एक क्रांतिकारी परिवर्तन है। अतएव कहा जा सकता है कि मॉल कल्चर से ग्रामीण जीवन भी बड़े स्तर पर प्रभावित हुआ है।

पसन्द की मनोवृत्ति

उपभोग की वस्तुएं अपने पसन्द के अनुसार धारण करना मानव जीवन की बड़ी विशेषता रही है। पसन्द का मनोवैज्ञानिक पक्ष भी है। वैसे परम्परागत बाजारों में पसन्द के विकल्प कम थे। लेकिन इधर विगत कुछ दशकों में मॉल कल्चर में मानव के पसन्द की मनावृत्तियों को बड़े स्तर पर प्रभावित किया है। परिणामस्वरूप मानव के पसन्द की मनोवृत्तियां बड़े स्तर पर बदली है। आज मॉल कल्चर में उपभोग से जुड़ी वस्तुओं के उपभोग के विविध स्तरों पर ढेर सारे विकल्प उपलब्ध है। इसका उदाहारण है– एक व्यक्ति किसी भी प्रकार की खरीददारी करने के लिए मॉल में जाता है तो उसके सामने ढेर सारे विकल्प होते हैं। उन विकल्पों में वह अपनी पसन्द के अनुसार सम्बन्धित वस्तुओं अथवा खाद्य

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सामग्रियों का चयन करता है। इस तरह से देखा जाय तो मॉल कल्चर में मानव के पसन्द की मनोवृत्तियों में आमूलचूल परिवर्तन आया है।

बनावटी सुन्दरता को बढ़ावा

बनावटी सुंदरता को अंग्रेजी में प्लास्टिक सेक्सुआलिटी कहते हैं, जिसकी अवधारणा एन्थोनी गिडेन्स ने दिया। मॉल कल्चर ने लोगों के जीने का तरीका बदला है। आज लोग मठों, मंदिरों में शांति की तलाश के बजाय मॉल की सीढ़ियों पर बैठे देखा जा सकता है। आज मॉल मनोरंजन के केन्द्र बने हैं। मॉल कल्चर ने आन्तरिक सुंदरता के बजाय बाह्य सुन्दरता के प्रति आकर्षण बढ़ाया है। आज लोग अपने बच्चों को घुमाने के लिए मॉल में ले जाना पसन्द कर रहे हैं। फ्रेडरिक जैमसन भी अपने अध्ययनों मे इसकी पुष्टि करता है। दो दशक में यह एक अलग प्रकार का परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। इन तथ्यों के आधार पर यह अवधारणा निर्मित होती है कि मॉल कल्चर ने बनावटी सुन्दरता की तरफ लोगों का आकर्षण बढ़ाया है।

वैयक्तिक स्वतंत्रता को बढ़ावा

मॉल कल्चर ने वैयक्तिक स्वतत्रता को भी बढ़ावा दिया है। दो से तीन दशक पहले माता–पिता एवं परिजनों के पसन्द को ही लोग अपनी पसन्द मानते थे। लेकिन धीरे–धीरे इस वैचारिकी में बदलाव आना प्रारम्भ हुआ। आज मॉल कल्चर के प्रभावस्वरूप जनसंख्या के एक बड़े हिस्से में स्वतंत्रता बढ़ी है। इसे एक उदाहरण द्वारा और स्पष्ट किया जा रहा है। कोई भी व्यक्ति शॉपिंग के लिए बच्चों के साथ मॉल में जाता है तो बहुतायत देखा जा सकता है कि व्यक्ति द्वारा बच्चे से पूछा जाता है कि तुम्हें क्या पसन्द है। इस तरह की स्वतंत्रता शहरों से होते हुए गांवों की तरफ पहुंच रही है। वैयक्तिक स्वतंत्रता की आवाज ग्रामीण समाज के बीच भी मुखर होने लगी है।

परम्परागत मूल्यों एवं मानदंडों की बेड़ियां कमजोर पड़ी हैं

मॉल कल्चर ने परम्परागत मूल्यों एवं मान्यताओं की बेड़ियों को प्रभावित किया है। ये मूल्य और मान्यताएं टूटती हुई दिखाई दे रही हैं। आधुनिक मूल्यों एवं मानदण्डों का प्रभाव पड़ा है। इस दिशा में ढेर सारे परंपरागत मूल्यों को कमजोर एवं टूटते देखा जा सकता है।

परम्परागत खरीददारी का बदलता स्वरूप

मॉल कल्चर ने प्राचीन बाजारों के स्वरूप को बड़े स्तर पर प्रभावित किया है, जिसमें प्रथम हम वस्तु विनिमय को देख सकते हैं। मॉल कल्चर में वस्तु विनिमय का कोई भी स्थान नहीं है। इसके साथ–साथ डिजिटल लेन–देन को बड़ स्तर पर बढ़ावा मिला है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

प्रत्येक स्तरों पर टूटती भेद की दीवारें

मॉल कल्चर ने भेद की दीवारों को बड़े स्तर पर तोड़ा है। भेद की वैचारिकी से मानव सभ्यता अपने अनादि काल से ही पोषित रही है। इसके प्रभाव को प्रत्येक कालखण्डों में देखा जा सकता है। चाहे वह सामाजिक भेद हो, आर्थिक भेद हो, सांस्कृतिक, प्रजातीय भेद हो या क्षेत्रवाद हो तथा लैंगिक एवं सम्प्रदाय भेद, इन सभी स्तरों पर मॉल कल्चर के प्रभावस्वरूप इस तरह के भेद कम हुए हैं। वैसे इन सभी स्तरों पर भेदों को संवैधानिक प्रावधानों द्वारा पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया ह, फिर भी इलेक्ट्रानिक मीडिया, प्रिन्ट मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से विभिन्न स्तरों पर भेद देखने को मिलते रहे ह आज मॉल कल्चर में ना ही किसी की जाति पूछी जाती है और ना ही किसी का धर्म पूछा जाता है। वहाँ मॉल कल्चर में समस्त घटनाओं को सिर्फ व्यवसाय के अन्तर्गत देखा जाता है। सभी जाति, प्रजाति, धर्म एवं सम्प्रदाय के लाग मॉल कल्चर में एक समान होते हैं। उनके एक समान व्यवहार भी किया जाता है। खासतौर से परम्परागत वैचारिकी के साथ आगे बढ़ने वाले देशों के लिए इस तरह का परिवर्तन मानवता के लिए बड़ा संदेश है। मॉल कल्चर में सभी लोग एक साथ बैठकर खाते हैं। वहाँ कुछ नहीं पूछा जाता है कि कौन किस जाति–धर्म का है। उन्हीं पात्रों में सभी जाति–धर्म के लोग भोजन ग्रहण करते हैं। इन तथ्यों के आधार पर यह अवधारणा निर्मित होती है कि विविध स्तरों पर भेद की वैचारिकी को मॉल कल्चर ने पूरी तरह से तोड़ा है।

आधुनिक होते गांव

संस्कृतिकरण एवं आधुनिकीकरण जैसी प्रक्रियाओं से ग्रामीण ग्रामीण समाज में काफी में बदलाव आया है। आज गांवों में भी महिलाओं को जीन्स, टी–शर्ट पहने बहुतायत देखा जा सकता है। जबकि मात्र दो दशक पहले इस तरह के वस्त्रों को धारण करना प्रतिबन्ध ही नहीं था। परन्तु अपराध की श्रेणी में था लेकिन जैस–जैसे मानव सभ्यता के पायदान पर आगे बढ़ता गया। वैसे–वैसे वह परम्परागत वैचारिकी को छोड़ता गया। आज गांवों में भी स्मार्ट फोन, माडर्न कपड़े, उपभोग के आधुनिक वस्त्रों एवं सामानों को धारण करते हुए लोगों को देखा जा सकता है। यहां प्रो. योगेन्द्र सिंह की दी हुई अवधारणा 'परम्पराओं का आधुनिकीकरण' सत्य सिद्ध होती है।

परम्परागत पूर्वाग्रह से बाहर निकलते लोग

मॉल कल्चर ने लोगों के मनोवृत्तियों पर भी गहरा प्रभाव डाला है। परिणामस्वरूप परम्परागत मनोवृत्तियां कमजोर पड़ी है। ग्रामीण जीवन में आज परम्परागत मनोवृत्तियों के बदलाव को बड़े स्तर पर देखा जा सकता है। पहली पीढ़ी के लोग भी इस वैचारिकी से बाहर निकलते दिख रहे हैं।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

परिवार, मठों, मंदिरों में शांति तलाश करने की बजाय मॉल कल्चर में शांति तलाश करते लोग

समाजीकरण का प्रमुख अभिकरण परिवार है। लेकिन इसके अलावा ढेर सारे अभिकरण समाजीकरण के लिए उत्तरदायी हैं। मनोरंजन एवं शांति की तलाश भी लोग प्रथम परिवार में करते हैं। लेकिन आज जिस तरह की संरचना खड़ी हुई है, वहाँ मनोरंजन एवं शांति की तलाश के मायनें भी बदले हैं। उत्तर आधुनिकता के पायदान पर जनसंख्या का अधिकांश भाग परिवार, मठों, मंदिरों में शांति की तलाश करने की बजाय मॉल में कर रहे हैं। फ्रेडरिक जैमसन भी अपने अध्ययन में इस बात की पुष्टि करता है। भारतीय समाज में बड़े स्तर पर तो नहीं छोटे स्तर पर इस तरह के प्रभाव को देखा जा सकता है। भारतीय समाज में इस तरह का बदलाव भारतीय मूल्यों एवं मान्यताओं के विपरित दृष्टिगोचर होता है।

संस्कृति का खुला प्रदर्शन

मॉल कल्चर के प्रभावस्वरूप वैश्विक स्तर पर संस्कृति के खुले प्रदर्शन को देखा जा सकता है। भारत में भी थोड़े बहुत अन्तर के साथ इस तरह का परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। इस तरह का परिवर्तन भारतीय मूल्यों एवं यहां की प्राचीन संस्कृति के पूरी तरह से विपरित है। भारतीय संस्कृति अपनी प्राचीनतम विशिष्टता के कारण ही अद्यतन अस्तित्व में है।

समापन अवलोकन

उपर्युक्त तथ्यों के आधार प्रस्तुत शोध–पत्र के समापन अवलोकन के रूप मे कहा जा सकता है कि मॉल कल्चर के वैश्विक प्रभाव के साथ–साथ भारतीय समाज पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है। आज भारत वैश्विक गांव की तरफ कदम बढ़ाया है जिसमें सभो की सहभागिता सुनिश्चित हो रही है। आज मॉल कल्चर ने जहां एक तरफ पसन्द की मनोवृत्तियों में परिवर्तन लाया है। वहीं दूसरी तरफ बनावटी सुन्दरता की भी तरफ लोग बड़े स्तर पर बढ़े हैं। वैयक्तिक स्वतंत्रता बड़े स्तर पर सुनिश्चित हुई है। परम्परागत मानदण्डों की बेड़िया एवं भेद की दीवारें कहीं कमजोर पड़ी हैं तो कहीं टूटी भी है।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि परम्परागत आदिम बाजारों का परिवर्तित स्वरूप ही मॉल कल्चर हैं जहां मॉल कल्चर ने परम्परागत प्रतिमानों को हाशिए पर ला खड़ा किया है। परम्परागत ब्रांड पूरी तरह से अपना अस्तित्व खो चुके हैं। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि मॉल कल्चर ने एक नयी संस्कृति से जुड़े मूल्य मानदण्डों की भी छाप छोड़ी है। ग्रामीण आकांक्षाएं भी बढ़ी है। मॉल कल्चर को दोधारी तलवार के रूप में भी देखा जा सकता है, जिसके फायदे भी कुछ हैं तो नुकसान भी।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

पठनीय ग्रन्थ

Singh, Yogendra (1986): Modernization of Indian Tradition, Rawat Publications, New Delhi.

Adrian Athique, Douglas Hill (2009): The Multiplex in India: A Cultural Economy of Urban Leisure, Routledge.

Singh, Yogendra (2010): Culture Change in India: Identity and Globalization, Rawat Publications, New Delhi.

Jamoson, Fredric (1991): Postmodernism or The Cultural Logic of Late Capitalism, Duke University Press.

Giddens, Anthony (1990): The Consequences of Modernit, Stanford University Press.

Gupta, Dipankar (2000): Mistaken Modernity : India Between Worlds, Harper Collins Publishers, India,

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language